SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVERSITY

Acknowledge & Preface

Introduction

स्मरण : आभार

इस लघु प्रबंध के अवसर पर उन विद्वानों, आलोचकों और मनीषियों का सादर स्मरण, जिनकी पुस्तकों की ज्ञान-राशि ने मेरा पथ आलोकित किया जिसका उपयोग प्रबंध में यत्र-तत्र हुआ है ।

मैं अपने शोध निर्देशक डॉ. ओमप्रकाश यादवजी के प्रति श्रद्धावनत आभार प्रदर्शित करता हूँ, जिनकी प्रेरणा से मुझे यह कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा जिनकी सहज आत्मीयता एवं सफल निर्देशन से मैं इस कार्य को संपन्न कर सका ।

मेरे पूज्य पिताजी रामप्रतापसिंह तथा स्नेहमयी माँ मूरतसिंह के प्रति अशेष नमन ।

अंतरंग मित्रों का सस्नेह जिन्होंने मुझे इस कार्य में आगे बढ़ाने के लिए सतत प्रोत्साहित किया । जिनकी प्रेरणा के अभाव में इस कार्य का संपन्न होना असंभव ही था ।

साथ ही महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बरौड़ा के ग्रंथालय परिवार के प्रति धन्यवाद ज्ञापन ! जिन्होंने इस कार्य को आगे बढ़ाने में मेरी पूरी-पूरी मदद की ।

बरौड़ा अमरपालसिंह आर.

प्रस्तावना :

डो. सूर्यदीन यादव बहुमुखी प्रतिभा के धनी रचनाकार माने जाते हैं, वे अभावों के बीच जीवन जीते हैं । मामूली आदमी की दर्द एवं संघर्ष से भरी गाथा कहने वाले सर्जक मुझे प्रारंभ से ही आकर्षित करते रहते हैं । हिन्दी विषय के साथ एम.ए. करते हुए मुन्शी प्रेमचन्द के उपन्यासों एवं कहानियों में मामूली इन्सानों की सुख-दुःख या संघर्ष की सच्ची प्रस्तुति मेरे मन-प्राण में रच-बस गई थी । उधर आधुनिक कहानीकारों में जब श्री डो. सूर्यदीन यादव के कथा-संसार में मैंने प्रवेश किया तो लगा धूप, मिट्टी एवं दर्द से लथपथ मामूली आदमी को इस कथाकार ने जिस प्यार से सहेजा हैं वह अद्‌भुत हैं । हिन्दी में पीएच.डी. के लिए विषय चयन के समय जब मैंने डो. सूर्यदीन यादव विषयक अपनी पसंद शोध निर्देशक डो. ओ. पी. यादव के समक्ष

प्रस्तुत किया तो उन्होंने मेरा उत्साह बढ़ाते हुए डो. सूर्यदीन यादव के कहानी एवं उपन्यास साहित्य पर गहराई से अध्ययन की दिशा सुझाई । मेरा मार्ग प्रशस्त हुआ और "कथाकार सूर्यदीन यादव : एक अनुशीलन" विषय निश्चित हुआ । यों तो डो. सूर्यदीन यादव के कुल चार कहानी संग्रह एवं आठ उपन्यास प्रकाशित होने के अलावा आठ काव्य संग्रह, चार समीक्षाग्रन्थ तथा दो निबंधसंग्रह भी प्रकाशित हुए हैं । परंतु मैंने अपने अध्ययन का आधार " डो. सूर्यदीन यादव की कहानियों एवं उपन्यासों का तात्विक विवेचन एवं कथ्य - शिल्प" को बनाया हैं । यह मेरे शोध की सीमा है और इसे स्पष्ट करना मेरा कर्तव्य हैं ।